

— विनि 1) *niederwerfen, hinwerfen, niederlegen, hinstellen*: रत्नासि रत्नासि विनिनिपति R. 5, 11, 12. या दिव्या इति मन्त्रेण कृत्स्नैर्ध्वं विनि-  
दिपेत् Jāṇ. 1, 281. गतासुम् — द्वारदेशे विनिनिपत्य MBh. 1, 6301. 4, 180.  
13, 638. Bhāg. P. 3, 23, 17. — 2) *in Verwahrung geben, anvertrauen* MBh.  
1, 8545. 3, 2294. — 3) *Jmd zu Etwas stellen, womit beschäftigen*: अन्तेषु  
मृगपायां च — मदे विनिनिपत्य MBh. 3, 10403.

— निस् wohl überall fehlerhaft für नि *niederlegen, hineinlegen*: नि-  
निपतिमात्रे गर्भे R. 1, 38, 21. किं शेषे कृत्वा कृतो भुवि ॥ नि:निपत्य दीर्घो नि-  
श्चेष्टो भुजो 6, 93, 12. यद्वस्तु नि:निपत्यमेतैः — तस्मिन्कुण्डे MBh. 3,  
14314. मन्त्रिका व्रणज्जातस्य नि:निपति यदा कमीन् Suca. 2, 13, 3.

— विनिस् fehlerhaft für विनि: मुक्ताञ्जलविनि:निपति: (भवने:) MBh.  
13, 1444. मनस्तासु विनि:निपत्य richten auf 3, 14293.

— परा *entretessen*: परानिपतस्वलोकत्रय: Bhāg. P. 5, 24, 18. *fortretessen*,  
*hinretessen*: औदार्येण परानिपतमना: 2, 18.

— परि 1) *mit Etwas über Etwas hinüberwerfen*: परिनिपति द्वापेन  
यावत्तावद्वाप्यसि R. 2, 32, 35. — 2) *umlegen, umwinden*: पितृन् रक्तज्ञे  
वापि सकृदेव परिनिपेत् Suca. 1, 68, 8. यत्नशाठके यीवामुद्योहपरि परि-  
निपत्य 358, 16. — 3) *umlegen, umwinden, umgeben, umlagern, umzingeln*,  
*umfassen*: यत्नशाठकेन परिनिपतीवासकथम् Suca. 2, 47, 2. काल-  
धर्मपरिनिपत: पार्श्वेव मृगाग्न: R. 2, 72, 38. 3, 35, 73. 45, 19. 75, 1. MBh.  
2, 2687. परिनिपता समुद्रेण लङ्का R. 3, 61, 31. 47, 13. 33, 35. MBh. 1, 1806.  
प्राकारिण परिनिपत् 3, 11698. परिनिपत्य हरिश्चेष्टं स बभौ रत्नां गणः  
R. 5, 50, 17. (वानरं बलम्) परिनिपत्य तदा लङ्काम् 6, 16, 24. प्रणयाञ्चभि-  
मानाञ्च परिचिते (umarmte) राघवम् 2, 30, 2. — परिनिपत AK. 3, 2, 37.  
H. 1474. MBh. 3, 16160. 13, 5261. 15, 1074. 18, 242. 251. R. 3, 6, 2. 15, 21.  
41, 25. 42, 53. 6, 106, 24. Çāṇ. 32, 19. Kumāras. 6, 38. Bhāg. P. 5, 20, 2.  
Bhāṭṭ. 6, 84. — 4) *hineinwerfen, hineinsetzen*: (तम्) बद्धोदुपे परिनिपत्य  
गङ्गायां समवासृजन् MBh. 1, 4205. — Vgl. परिनिपे u. s. w.

— प्र 1) *hinschleudern, hinwerfen, hineinwerfen, hineinlegen, vorlegen*,  
*vorsetzen*: शरान्दीप्तान्प्रचिते सुते मम MBh. 3, 107. नेत्रपतिना लगुडः  
प्रतिपत: Hir. 23, 12. नामेध्यं प्रतिपदमौ M. 4, 53. 3, 261. MBh. 1, 7665. 3,  
542. 12756. तं तु सुतम् — गङ्गायां प्रतिपामहे 1, 4992. तं धनदेवम् — न-  
दीतटगुरुयां प्रतिप्य Pañkā. 100, 18. पापेषु प्रतिपन्कीनम् Jāṇ. 2,  
245. तारं तते प्रतिपन् Māṇ. 84, 3. कतपोहस्तं प्रतिपामि 50, 1. तां स  
प्रातिपत्यञ्जरात्तरि Pañkā. III, 144. मत्स्यमांसखण्डानि नकुलविलद्वारा-  
त्सर्पकोटरे (acc. schwerlich richtig) यावत्प्रतिप 98, 22. स्वयं प्रतिपते  
भक्त्यं बहु भीमस्य MBh. 1, 5010. — Itih. bei Śā. zu RV. 1, 6, 5. R. 1, 73,  
26. 3, 8, 19. 74, 24. 5, 51, 7. Suca. 1, 164, 5. Māṇ. 48, 18. 49, 5. Pañkā.  
52, 15. 64, 1. 85, 24. 103, 1. 147, 1. 223, 12. 228, 1. 3. Vet. 17, 20. Bhāg.  
P. 9, 18, 17. Daṣak. in Benf. Chr. 197, 10. — 2) *etnschalten, interpoli-*  
*ren*: नित्यमाप्रेक्षिते उचीति वार्तिकदर्शनासूत्रे कैश्चित्प्रतिपत् Kāṇ. zu  
P. 6, 1, 100 und 3, 3, 122. Sch. zu 6, 3, 82. Sch. am Ende von R. 2, 96. —  
*caus. hineinwerfen —, hineinlegen lassen*: तद्वद्वे — विषं प्रतेपयामास  
MBh. 1, 5008. 3, 540.

— संप्र *hinschleudern*: शरान् MBh. 13, 4609.

— प्रति stets act. P. 1, 3, 80. Vop. 22, 1. 1) *werfen in*: अघावेनां प्रति-  
निपत्य MBh. 1, 7068. — 2) *anstossen, verletzen*: दृष्टिम् Suca. 2, 314, 13.

— 3) *verhöhnern, verspotten oder verwerfen* (Burnouf): पे बुद्धधर्मान्प्र-  
II. Theil.

तितेप्सति Lalit. bei Burn. Intr. 504, N. 3. प्रतिनिपत = अघनिपत AK.  
3, 1, 42. H. 440. = निरस्त, प्रत्यादिष्ट, अघनिपत H. 1474. = प्रतिनित H.  
an. 4, 114. = वारित Med. I. 207. — Das partic. प्रतिनिपत hat nach Tai.  
3, 3, 169. H. an. und Med. noch die Bed. *abgesandt* (प्रेषित, प्रकृत).

— वि 1) *hierhin und dorthin werfen, auseinanderwerfen, hierhin  
und dorthin entsenden, vertheilen, zerstreuen*: शक्तार्धोरा व्यनिपत् MBh.  
in Benf. Chr. 34, 10. स्फुरता विनिप्यमाणा धनुषा नरेन्द्रा: MBh. 1, 7022.  
वायुविनिपत्कुसुमै: 1310. 3, 487. 12810. 13, 7388. Amar. 54. Bhāg. P. 4,  
24, 22. यत्कृते वानरा: सर्वे विनिपता: सर्वतो दिश: R. 5, 15, 23. अभितथानु-  
यी विनिपती Śāṇ. D. 71, 4. अलकम् Megh. 88. तत्र मेधाविन: केचिदर्थम-  
न्यैरुदीरितम् । विचिनिप्यथा श्येना नभोगतमिवामिषम् ॥ zerpfücken  
MBh. 2, 1311. यत्र यत्र दोषो विनिपतो नि:सरति Suca. 1, 267, 14. 2, 220, 2.  
विनिप्यमाणो ऽत्तरिर्भवत्याशु बहिष्कार: 401, 5. मुहुरेदो विनिपत्याशु  
कथाभिर्त्रणवेदना: 1, 69, 12. 248, 1. विनिपेन्द्रियधियो देवा: Bhāg. P. 9, 9, 46.  
विनिपतचित Madhus. in Ind. St. 1, 22. Vedāntas. 76. — 2) *ausdehnen*,  
*auseinanderrecken, ausstrecken*: मर्कार्णवं विनिपेत्संनिपेच्चैव MBh. 14,  
1161. सर्वगात्राणि विनिप्य किं शेषे R. 6, 95, 35. चरणी 3, 73, 23. बाहू  
2, 72, 17. 5, 14, 15. Śāṇ. D. 87, 5. बाहुविनिपेत् absolut. MBh. 4, 1305. धू-  
विनिपेत् oder ध्रुवं विनिपेत् कथयति P. 3, 4, 54, Sch. विनिपत्तू Bhāg. P. 8, 8,  
46. — 3) *abschnellen lassen* (die Sehne vom Bogen), *abschiessen* (den  
Bogen): स्या विनिपतश्च मर्काधनुर्न्य: MBh. 3, 15690. विनिपत्तार्थंश्चापि  
धनु:श्रेष्ठम् 694. 696. 4, 1423. 14, 2119. R. 3, 70, 2. 6, 7, 46.

— सम् 1) *auf einen Haufen werfen*: संनिपतनीवरासु (भूमिषु) Ragh. 1,  
52. — 2) *zusammenwerfen, vernichten*: संनिप्य लोकाश्च स्मिदयान्यान्  
R. 3, 43, 42. विस्मृत्संनिपत्तपि MBh. 13, 661. काल: संनिपते सर्वा: प्रजा  
विस्मृते पुन: 1, 242. 3, 496. 2168. संनेतुमिव मानुषान् R. 3, 30, 3. यदिदं  
दृश्यते किंचिद्वृत्तं स्थावरजङ्गमम् । पुन: संनिप्यते सर्वं जगत्प्राये युगन्तये ॥  
MBh. 1, 38. सत्यं संनेप्स्यते लोके नरै: पण्डितमानिभि: 3, 13022. मत्परा-  
क्रमसंनिपतराजभोगपरिच्छद् Bhāṭṭ. 5, 86. — 3) *einzwängen, fesseln, im  
Zaum halten*: धर्मपाशसंनिपत R. 2, 40, 39. संनिप्य (imperat.) संरम्भम् Bhāṭṭ.  
2, 52. — 4) *auf einen kleinen Raum zusammendrängen, abkürzen, ver-  
kleinern*; pass. *zusammenschrumpfen, kleiner werden*: मर्कार्णवं विनि-  
पेत्संनिपेच्च MBh. 14, 1161. स पातस्तेजसा व्योम संनिपत्तव्यं वेगित: R. 4,  
61, 44. शरीरमत्यर्थं संनिप्य 5, 8, 25. 6, 24. 56, 140. विस्तीर्यतन्महज्ज्ञान-  
मृषि: संनिप्य चाब्रवीत् MBh. 1, 51. संनिप्यते यशो लोके घृतविन्दुरिवा-  
भसि M. 7, 34. संनिप्येत त्णामिव कथं दीर्घयामा त्रियामा Megh. 107. सं-  
निपत *zusammengerückt, verengert, verkürzt; eng, schmal, kurz*: विकर्ष  
Nir. 3, 9. लोचने Suca. 1, 113, 7. ध्रुवो 9. 117, 18. ein Verband 55, 15. उरस्  
Mālav. 24. im Gegens. von दीर्घ (अधन्) MBh. 1, 4904. *zusammengedrängt*,  
*verkürzt*, von Erzählungen u. s. w. MBh. 13, 1122. Śāṇkujak. 71. Madhus.  
in Ind. St. 1, 21. (भृगव:) संनिपतास्तस्य तेजसा *eingeschrumpft, verfinstert*  
Bhāg. P. 8, 18, 25. — Vgl. संनेप.

— अभिसम् *auf einen kleinen Raum zusammendrängen*: स्वान्यङ्गा-  
न्यभिसंनिप्य MBh. 3, 283. सौष्टवेणाभिसंनिपत: 1, 5368. — Vgl. अभिसंनेप.

— उपसम् s. उपसंनेप.

— परिसम् *umzingeln* R. 5, 29, 20.

2. लिप् f. nur im nom. pl. लिप्यस् und instr. लिप्याभिस् (रङि. लप्, लपा-  
भिस्); Fing. Naigh. 2, 5. दृष्ट लिपि: पूर्व्यं सीमन्नीजनन् RV. 3, 23, 3. दृष्ट